AGPE The Royal Gondwana Research Journal of History, Science, Economic, Political and Social Science
ISSN (E): 2583:1348 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 03 | Issue 02| March 2022| ***www.agpegondwanajournal.co.in*** | Page No. 43-47

आपदा प्रबंधन मे सहायता तथा सेवाए देने वाली संगठनो एवं संस्थाओं का भौगोलिक अध्ययन

डॉ. संदीप रुपरावजी मसराम
सहायक प्राध्यापक- भूगोल विभाग
वसंतराव नाईक शासकीय कला एवं
समाज विज्ञान संस्था, नागपूर. 440001

प्रस्तावना-

मानव जाति की शुरुवात से ही, वह एक प्रतिकूल स्थिती में रहते आ रहा है। प्राचीन काल से ही अत्यंत घातक आपदाए आती रही है और भविष्य में भी मानव समूह कों तथा सभी जिवित घटकों कों इस प्रकार के अपदाओ का सामना करना होगा। बार बार होने वाली अपदाओ कों नजर अंदाज कर दिया जाता है , लेकिन कई बार जब आपदाएं पुरे पारिस्थितिकी तंत्र के साथ मानव जीवन के लिए भी खतरा बन जाती है तब सही अर्थ में आपदा के भयावता का एहसास होता है। धरातल पर विभिन्न प्राकृतिक घटनाए होती रहती है। जीनमे बाढ़, सुनामी, भूकंप, सुखा, ज्वालामुखी, भूस्तखलन, हिमस्तखलन, जंगलो में आगमहामारी शामिल है। सभी आपदाए प्राकृति द्वारा ही नहीं होती है, कुछ घटनाए मानव हस्तक्षेप के कारन भी होती है। मानव जान बुझकर या अंजाने में विकास कार्यों के लिए तथा मानव जीवन के उन्नती के लिए प्रकृति में परिवर्तन करता है। इस परिवर्तन से प्रकृति के साथ छेड़छाड़ से अपदाओ का जन्म हो सकता है।

आपदा में और खतरे में फरक होता है। खतरा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मानव , भूरचना, आर्थिक संपत्तियों के लिए धोका है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो मानव जीवन को कुछ हद तक या पूरी तरह से नष्ट कर देती। आपदा एक बड़ा संकट है। किसी भी खतरे के स्त्रोत की प्रकृति क्या है, उस खतरे के परिणामोकी गंभीरता इस पर निर्भर करती है। यदि खतरे की गंभिरता बहुत अधिक है तो इसे प्रलय कहा जाता है।

आपदा को सयुक्त राष्ट्र ने परिभाषित करते हुए कहा है की, यह एक विनाशकारी भयावह घटना है जो मानव हताहतो के साथ अन्य प्रकार के क्षति का कारन बन सकती है। आपदा बिना किसी चेतावनी से होती है। इनकी सटीक भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। किसी आपदा से होने वाली क्षति सिमित क्षेत्र या सिमित आबादी तक सिमित नहीं।

EM – DAT ने १९०० से लेकर वर्तमान तक की सभी आपदाएं शामिल है, जो निम्न मानदंडो में से कम से कम एक के अनुरूप है- १० या अधिक लोक मरे गये, १०० या अधिक लोक प्रभावित हो जाए, आपातकाल की स्थिती की घोषणा या अंतर्राष्ट्रीय सहायता का आवाहन की स्थिती निर्माण हो जाए।

आपदा के सभी चरणों में प्रबंधन की आवश्यकता होती है। इन चरणों में आपदा की तयारी एवं शमन का चरण, आपदा घटना चरण, प्रतिक्रिया चरण और पुनर्प्राप्ति चरण जिसमे पुनर्वास और पुनर्निर्माण प्रक्रियाए शामिल है। यह आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में लगे विभिन्न कारकों जैसे की सरकारी, गैर- सरकारी और निजी कारकों के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। आपदा और विकासात्मक गतिविधियों में विभिन्न संस्थओं की भूमिका से संबंधित है। व्यापक आपदा प्रबंधन प्रणालीके लिए

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Dr. Sandip Masram Asst. Professor Department of geography Vasantrao Naik Government Institute of Arts and Social Science, Nagpur Email: sandip.masram84@gmail.com	

इन सहायता तथा सेवा देने वाली संस्था, उनके कार्य तथा उनके अंतर्संबंध का भौगोलिक अध्ययन करना आवश्यक है ।

अध्ययन के उद्देश –

प्रस्तुत संशोधन पत्र के अध्ययन का उद्देश आपदा के स्वरूप पर राहत कार्य करने वाले विभिन्न संस्थओं की जानकारी प्राप्त करना है । पृथ्वी के विभिन्न प्रदेशो में आने वाली विभिन्न अपदाओ में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, राष्ट्रिय स्तर पर तथा प्रादेशिक स्तर पर सहायता तथा सेवा देने वाली संस्थाओं के बारे में अवगत होना जरुरी है । इस संशोधन पत्र के उद्देश निम्नलिखित है-

१) आपदा प्रबंधन में सहायता तथा सेवा देने वाली संस्थाओं का अभिक्षेत्रिय अध्ययन करना ।

२) आपदा प्रबंधन में सहायता तथा सेवा देने वाली संस्थाओं को वर्गीकृत करना ।

बीज संज्ञा –

आपदा, खतरा, आपदा प्रबंधन, गैर – सरकारी संगठन, पुनर्प्राप्ति और पुनर्निर्माण, रोकथाम और शमन,आपदा जोखिम इ ।

संशोशन विधी –

प्रस्तुत संशोधन पत्र के लिए द्वितीयक जानकारी का उपयोग किया गया है । विभिन्न भौगोलिक क़िताबे, संशोधन पत्र, ऑनलाइन जानकारी, अख़बार तथा इंटरनेट से जानकारी प्राप्त की गई है । आपदा प्रबंधन में सहायता, राहत तथा सेवा देने वाली संस्थाओं को विभिन्न स्तर पर वर्गीकृत किया गया है ।

कार्यक्षेत्र –

प्रस्तुत संशोधन पत्र में आपदा प्रबंधन में सहायता तथा सेवा देने वाली संगठनों तथा संस्थओं की भूमिका का का भौगोलिक अध्ययन किया जाएगा । आपदा, आपदा के दौरान, और आपदा के पश्चात विभिन्न प्रकारके संगठन तथा संस्थाए मदत कार्य पहुचाते है । इस मदत कार्य में धन, राहत की सामग्री, श्रमदान, बचाव कार्य, पुनर्वसन तथा इससे संबंधित सभी प्रकार की सेवा प्रदान की जाती है । प्रस्तुत पत्र में प्रादेशिक, राष्ट्रिय तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठन तथा संस्थओं का अध्ययन किया जाएगा ।

विश्लेषण –

आपदा प्रबंधन में सहायता सेवा तथा देने वाली संस्थाए आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय सेवाए देने के लिए अपना धन, समय तथा श्रमाधिष्ठित कार्य करते है । सहायता याने केवल धन देना यहा तक सिमित नहीं है । उसके उपरांत भी उस धन का सही एवं जरुरत वाले व्यक्ती या समूह के पास आवश्यक वस्तू एवं सेवा देने के लिए नियोजन का कार्य भी होता है । राहत कोष आपदा में सबसे महत्वपूर्ण होती है । बोहोत सारी संस्थाए आपदा प्रबंधन में इस प्रकार से कार्य करती है । विभिन्न भौगोलिक प्रदेशो में आने वाली आपदा का स्वरूप अलग अलग होता है । विभिन्न अपदाओ में कार्य करनेवाली संस्थाए भी अलग अलग होती है ।

आपदा प्रबंधन के लिए सरकारी संस्थाए महत्वपूर्ण कार्य करती है । आपदा प्रबंधन को सरकारी और सामाजिक स्तरों पर एक प्रभावी योजना तथा समन्वय प्रक्रिया करने के लिए एक मजबूत राजनीतिक प्रतिबद्धता की आवश्यकता है । आपदा प्रबंधन योजना एक अनुक्रमिक और निरंतर प्रक्रिया है । प्रभावी योजना के लिए सटीक निदान, संसधान मुल्यांकन और आपदा न्यूनीकरण के लक्षो की पूर्ति के लिए निरंतर प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है । राष्ट्रीय, राज्य तथा प्रादेशिक स्तर पर समन्वय के लिए तथा शीघ्र गति से उपाय करने के लिए संरचनात्मक संस्थाए अपना काम करती है ।

आपदा प्रबंधन में दाता संगठन तथा संस्थाए -

आपदा प्रबंधन के लिए निम्नलिखित संगठन तथा संस्थाए महत्वपूर्ण कार्य करती है।

१ राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) –

भारत में प्रधानमंत्री की अध्यक्ष में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का गठन किया गया है। भारत में आपदा प्रबंधन के लिए यह संस्था सर्वोच्च निकाय है। भारत में आपदा प्रबंधन की प्रभावशीलता में सुधार के लिए सभी हितधारको को दर्शाता है। राज्य स्तर पर कुछ राज्यों में राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण स्थापित किया गया। कुछ राज्यों में, आपदा प्रबंधन विभाग तदर्थ कर्मियों के साथ राहत और पुनर्वास विभाग, होमगार्ड विभाग और आपातकालीन अग्निशमन सेवओं के विभाग के नाम से भी जाने जाते है।

२ आपदा प्रबंधन में भारतीय सशस्त्र बलों की भूमिका –

सशस्त्र बल केंद्र सरकार के रक्षा मंत्रालय के अधिन है।बड़ी आपदा में भारतीय सशस्त्र बल बचावात्मक कार्य करते है। आपातकालीन स्थिती में सहायता और प्रबंधन के लिए इनको बुलाया जाता है। अत्यंत विपरीत परिस्थितिमे डटकर साहसी कार्य करते है। यह भारत के साहस का अद्वितीय, अतुलनीय एवं गौरवान्वित संगठन है। आपदा में फसे हुए सामान्य जनता को सशस्त्र बल के सिपाही दिखते ही अब हम बच जाएंगे ऐसी सकारात्मक भावना निर्माण हो जाती है। आपदा स्थिती में सबसे पहले और सबसे आखरी जान बचाने के लिए यह दक्ष भूमिका निभाते है।

३ राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (NDRF)-

राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल की कर्तव्यदक्ष भूमिका एक खतरनाक आपदा स्थिती से निपटने के लिए है। यह राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के अधिन कार्य करता है। राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल बहु अनुशासनात्मक, बहु कुशल और उच्च तकनिकी बल है। इस बल ने भारत के अलग अलग आठ स्थानों पर राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल का गठन किया है।

४ संयुक्त राष्ट्र आपदा प्रबंधन दल (UNDMT)-

सयुक्त राष्ट्र निवासी समन्वयक प्रत्येक आपदा या आपातकालीन प्रवण देश में संयुक्त राष्ट्र आपदा प्रबंधन दल के गठन और नेतृत्व का कार्य करते है। यह संस्था आपदा न्यूनीकरण और शमन के लिए केंद्रबिंदु के रूप में कार्य करती है। साथ ही पुनर्वास और पुनर्निर्माण कार्यक्रमों में और प्रभावी राहत सहायता सुनिश्चित करती है। भारत में संयुक्त राष्ट्र आपदा प्रबंधन दल केंद्र, राज्य और उप राज्य स्तरों पर किसी आपदा की स्थिती में सरकार की प्रतिक्रिया के लिए त्वरित, प्रभावी और देश स्तरीय समर्थन सुनिश्चित करता है।

६ भारतीय रेड क्रॉस सोसायटी –

ब्रिटिश रेड क्रॉस से स्वतंत्र भारतीय रेड क्रॉस सोसायटी गठन करने का विधेयक भारतीय विधान परिषद् में पारित हुआ। ७ जून १९२० से आपदा प्रबंधन में भारतीय रेड क्रॉस सोसायटी राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कर रही है।

७ राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) –

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) भारत सरकार के युवा व खेल मंत्रालय द्वारा प्रायोजित एक सार्वजनिक सेवा कार्यक्रम है। इसका उद्देश सामुदायिक सेवा के माध्यम से छात्र के व्यक्तित्व का विकास करना है। राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम से छात्रों और शिक्षकों दोनों को सामुदायिक सेवा में उनकी संयुक्त भागीदारी के कार्यों में शामिल होने की भावना मिलती है। आपदा के बाद बहुत जगह पर राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्रों द्वारा राहत कार्य किया गया है।

८ राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC) –

राष्ट्रीय कैडेट कोर यह भारतीय सैन्य कैडेट कोर द्वारा संचलित है। इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है। यह स्वैच्छिक आधार पर पाठशाला एवं महाविद्यालय के छात्रों के लिए खुला है। राष्ट्रीय कैडेट कोर एक त्रिसेवा संगठन है जिसमे थल सेना, नौ सेना और वायु सेना शामिल है। भारत में राष्ट्रीय कैडेट कोर एक स्वैच्छिक संगठन है जो पुर भारत में हाईस्कुलों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयो से कैडेटो का चयन करता है।

९ भारत स्काउट्स और गाइड्स –

भारत स्काउट्स और गाइड्स भारत का राष्ट्रीय स्काउटिंग और गाइडिंग असोसिएशन है। महाविद्यालयों में स्काउट्स और गाइड्स को रेंजर एंड रोवर क्र नाम से जाना जाता है। भारत में स्काउटिंग की स्थापना स्काउट्स असोसिएशन की एक विदेशी शाखा के रूप में १९०९ में हुई थी। भारत में गाइडिंग १९११ से शुरू हुई और वर्ल्ड असोसिएशन ऑफ़ गर्ल्स गाइड्स के संस्थापक सदस्यों में से एक थी। सेवा करने के लिए हमेशा तैयार रहने की तथा कोशिश करने की सिख यहा मिलती है।

१० राष्ट्रीय स्कूल सुरक्षा कार्यक्रम –

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन ने देश में सुरक्षित शैक्षिक वातावरण प्रदान करने की दृष्टी से अन्य आपदा न्यूनीकरण परियोजनओं के तहत राष्ट्रीय स्कूल सुरक्षा कार्यक्रम को मंजूरी दी है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के साथ कुछ राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों के साथ सजेदारी में परियोजना को लागु करेगा।

११ नेहरू युवा केंद्र संगठन (NYKS) –

नेहरू युवा केंद्र की स्थापना ग्रामीण युवाओं के राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में भाग लेने के साथ उनके व्यक्तित्व और कौशल के विकास के अवसर प्रदान करने के उद्देश से की गई है। नेहरू युवा केंद्र संगठन को इन केन्द्रों के कामकाज की निगरानी के लिए भारत सरकार के युवा एवं खेल मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संगठन के रूप में स्थापित किया गया है।

१२ आपदा प्रबंधन में अस्पतालों की भूमिका –

स्वायत्त क्षेत्र आपदा और जोखिम प्रबंधन में एक महत्वपूर्ण दान सहायता देने वाली संस्था है। आपदा और जोखिम प्रबंधन में सरकारी तथा निजी अस्पतालों और स्वास्थ सुविधओं की भूमिका, कार्य और जिम्मेदारिया अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रतिक्रिया योजनओं पर ध्यान केंद्रित करने सहित कई नुकसानों की पहचान की गई है। प्राकृतिक अपदाओ के समय के लिए स्वास्थ देखभाल सुविधओं को लैस करना पुरे विश्व में विशेष रूप से भारत जैसे विकासशील देशो में बहुत महत्त्व रखना है।

१३ गैर सरकारी संगठन (NGO'S)-

गैर सरकारी संगठन बड़ी संख्या में दुनिया भर में आपातकाल या आपदा के सभी पैमानों से तैयारियो, प्रतिक्रिया और पुनर्वसन में एक अभिन्न भूमिका निभाते है। भारत में आपदा में कार्य करनेवाली गैर सरकारी संगठन की संख्या अधिक है। आपदा से पूर्व, आपदा के दौरान तथा आपदा के बाद सरकारी संस्थाओं के साथ राहत कार्य करती है।

अन्य संगठन तथा संस्थाए-

आपदा प्रबंधन में सहायता तथा सेवा देने वाली बोहोत सारी राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाए एवं संगठन कार्यरत है। वह संस्थाए एवं संगठन अपना कम लगन से करती है। आपदा प्रबंधन में कार्य करनेवाली कुछ संस्थाए एवं संगठन निम्नलिखित है –

- संयुक्त राष्ट्र (UN)
- समुदाय आधारित संगठन (CBO'S)
- अंतर्राष्ट्रीय विकास विभाग (DFID)
- आपदा कार्य बल (DTF)
- संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय विकास संस्था (USAID)
- संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (UNICEF)
- संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP)
- अंतर्राष्ट्रीय खाद्य कार्यक्रम (WFP)
- अंतर्राष्ट्रीय आरोग्य संगठन (WHO)
- अंतर्राष्ट्रीय मजदूर संगठन (ILD)

- संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (UNFPA)
- विश्व बैंक (WB)
- गृह मंत्रालय (MHA)
- पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MOET & CC)
- राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान (NIRD)
- राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (SDMA)

निष्कर्ष –

आपदा प्रबंधन को सरकारी और सामाजिक स्तरों पर एक प्रभावी योजना और समन्वयन प्रक्रिया स्थापित करने के लिए एक मजबूत राजनीतिक प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। उचित प्राधिकरण के साथ एक प्रभावी आपदा योजना को बनाये रखने के लिए उपयुक्त बजट की आवश्यकता है । आपदा प्रबंधन योजना एक अनुक्रमिक और निरंतर प्रक्रिया है । प्रभावी योजना के लिए व्यवस्थित निदान, संसाधन मूल्यांकन और आपदा न्यूनीकरण के लक्ष्यों की पूर्ति के लिए निरंतर प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है । आपदा प्रबंधन में कार्य करनेवाली संस्थओं तथा संगठनों की संख्या अधिक है । इसीलिए यह आवश्यक है की समन्वय के लिए एक रुपरेखा को स्वीकार किया जाए और इसके लिए प्रावधान किया जाए ।

आपदा प्रबंधन में सहायता तथा सेवा देनी वाले संगठनों तथा संस्थओ के अध्ययन से पता चल रहा है की सरकारी संगठनों के साथ साथ बहुत सारे गैर सरकारी संगठन एवं सामाजिक संगठन कार्य कर रहे है । इन सभी संगठनों और संस्थाओ को दो प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है । एक, केंद्र स्तर की संस्थाए, राज्य स्तर की संस्थाए और जिला स्तर कि संस्थाए । दूसरा, सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाए और तिसरा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाए तथा राष्ट्रीय संस्थाए ।

यह संस्थाए एवं संगठन राष्ट्रीय रहो या अंतर्राष्ट्रीय, सरकारी रहो या गैर सरकारी तथा इनका प्रादेशिक स्तर कोई भी हो लेकिन उद्देश एक ही है । सहायता तथा सेवा देने के लिए यह संस्थाए एवं संगठन सदैव तत्पर होते है । हमारा यह आद्य कर्तव्य है की, हम भी इन में से किसी भी संस्था एवं संगठन से जूस जाए । तन-मन-धन इनमे से जो भी सेवा आपदा प्रबंधन में दे सके वह देने की कोशिश करे । राष्ट्र के लिए समर्पण की भावना निर्माण होना जरुरी है ।

संदर्भ –

१) Gupta Harsh K. (2003), Disaster Management, University press, Hyderabad.

२) R. B. Singh, Disaster Management, Rawat publication, Jaipur.

३) Dr. Sanjeev Kumar, Role of donor agencies in disaster management, International journal of multidisciplinary education and research volume 3, Issue 4, July 2008, Page no. 07-11.

४) Encyclopedia of Disaster Management, Goel, S.L.Deep & Deep publication Pvt.Ltd.

५) अर्जुन मुसमाड़े, ज्योतिराम मोरे, (२०१४) आपत्ती व्यवस्थापनाचा भूगोल, डायमंड पब्लिकेशन, पुणे.

६) प्रा. जवाहर चौधरी (२०१६) नैसर्गिक आपत्तीचा भूगोल, कैलाश पब्लिकेशन, औरंगाबाद.

७) मनिष कुमार शुक्ला, आपदा प्रबंधन विभिन्न एजंसियो की भूमिका.

८) www.ndmindia.nic.in

९ www.nidm.net

१० http://egyankosh.ac.in

■ ■ ■